

पाठ—40 श्रीकृष्ण और

महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद श्रीकृष्ण छत्तीस बरस तक द्वारका में राज्य करते रहे ।

यदुवंश का नाश देखकर बलराम को असीम शोक हुआ और श्रीकृष्ण भी ध्यानमग्न हो गए ।

यह सोचते—सोचते आखिरकार श्रीकृष्ण पेड़ के नीचे बैठे—बैठे ही समाधिस्थ हो गए ।

शोकजनक समाचार सुनकर पांडवों के मन में सांसारिक जीवन के प्रति विराग छा गया ।

अभिमन्यु पुत्र परीक्षित को हस्तिनापुर की राजगद्दी सौंपकर हिमालय की ओर चल दिए ।

परीक्षित और उसके वंशजों ने न्यायोचित शासन की परंपरा का निर्वाह करते हुए दीर्घ समय तक राज्य किया ।

इस कथा के माध्यम से कौरव और पांडवों के जीवन संघर्ष की संपूर्ण कथा से पाठकों का परिचय हुआ ।